

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 8, Issue 7, July 2019

ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चेतना

डा. अनिता सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, डी. बी. एस. कॉलेज, गोविंद नगर, कानपुर

सार

ममता कालिया (02 नवम्बर, 1940) एक प्रमुख भारतीय लेखिका हैं। वे कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध, कविता और पत्रकारिता अर्थात् साहित्य की लगभग सभी विधाओं में हस्तक्षेप रखती हैं। हिन्दी कहानी के परिदृश्य पर उनकी उपस्थिति सातवें दशक से निरन्तर बनी हुई है। लगभग आधी सदी के काल खण्ड में उन्होंने 200 से अधिक कहानियों की रचना की है। वर्तमान में वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की त्रैमासिक पत्रिका "हिन्दी" की संपादिका हैं। ममता का जन्म 02 नवम्बर 1940 को वृन्दावन में हुआ। उनकी शिक्षा दिल्ली, मुंबई, पुणे, नागपुर और इन्दौर शहरों में हुई। उनके पिता स्व विद्याभूषण अग्रवाल पहले अध्यापन में और बाद में आकाशवाणी में कार्यरत रहे। वे हिंदी और अंग्रेजी साहित्य के विद्वान थे। उत्तर जीवन में पहुंचते ही लेखक संस्मरणों में सिमटने लगती हैं। कुछ लोग तो जीवन की अर्धशती से ही संस्मरणों का खाका बुनने लगते हैं। वह बताती हैं कि मैंने जब लिखना शुरू किया था, प्रायः उस उम्र में आजकल की लेखिकाएँ नहीं लिखती हैं। आजकल प्रौढ़ अवस्था में वे लिखना शुरू करती हैं, जब कलम-कलाई में चौकन्नापन आ जाता है लेकिन अब लेखिकाएँ सिर्फ महिलाओं की स्थिति पर ही नहीं, पुरुषों के संघर्ष को भी अपने लेखन का विषय बना रही हैं, जो अच्छी बात है।

परिचय

हिंदी साहित्य की जानी मानी साहित्यकार ममता कालिया का जन्म दो नवंबर, 1940 को मथुरा (उ.प्र.) में हुआ था।



वह हिंदी और अंग्रेजी, दोनों भाषाओं में लिखती हैं। वह कहती हैं कि एक तरह से कहानी लेखन में पुरुष लेखक माइनॉरिटी में आ गए हैं। लेखिकाएँ सिर्फ महिलाओं की स्थिति पर ही नहीं, बल्कि पुरुषों के संघर्ष को भी अपने लेखन का विषय बना रही हैं, जो अच्छी बात है। दिल्ली विश्वविद्यालय से एमए अंग्रेजी की डिग्री लेने के बाद वह मुंबई के एसएनडीटी विश्वविद्यालय में परास्नातक विभाग में व्याख्याता बन गईं। वर्ष 1973 में वह इलाहाबाद के एक डिग्री कॉलेज में प्राचार्य बनीं और वहीं से वर्ष 2001 में अवकाश ग्रहण किया। उनकी बेघर, नरक-दर-नरक, दुखम-सुखम, सपनों की होम डिलिवरी, कल्चर वल्चर, जांच अभी जारी है, निर्मोही, बोलने वाली औरत, भविष्य का स्त्री विमर्श समेत कई कृतियां चर्चित रही हैं।^[1,2]

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 8, Issue 7, July 2019

अब तक उनके करीब 10 उपन्यास और 12 कहानी संग्रह आ चुके हैं। उनका समूचा लेखन मामूली लोगों के पक्ष में जबरदस्त गवाही है। वह कहानी से शुरुआत कर अपनी लेखनी को प्रेमचंद एवं अमरकांत की राह पर ले गईं, जहां उनकी भाषा एवं भाव नयी संवेदना के साथ कहानी को गति देते हैं। भूमंडलीकरण पर दौड़ सरीखी कहानी से लेकर बदल रहे दौर में मामूली लोगों पर एकदम अभी की कहानी हरजाई उन्हें हरदम पुनर्नवा-पुनर्नवा लेखिका के रूप में पाठकों को परिचित कराती है।

ममता कालिया कहती हैं कि महिला लेखिकाओं का विषय अब मात्र महिलाएं नहीं रह गई हैं। अपने दैनिक जीवन में वह पुरुषों के संघर्षों को भी रेखांकित कर रही हैं। पिछले कुछ समय से हिंदी में महिला लेखिकाएं जिजीविषा के साथ काफी कुछ लिख रही हैं। हिंदी में पिछले कुछ समय से महिलाओं द्वारा अपने बारे में भी खुलकर लिखा जाना एक अच्छा संकेत है। देखा जाए तो समाज में एक सकारात्मक किस्म का वातावरण बन रहा है। आज से लगभग एक-डेढ़ दशक पहले तक कहा जाता था कि स्त्रियां भी लिखती हैं। स्त्रियों ने इस बीच लिखकर यह साबित कर दिया कि स्त्रियां ही लिख रही हैं। कहानी लेखन में पुरुष लेखकों को अब उंगुलियों पर गिना जा सकता है। इस स्थिति के पीछे स्त्रियों की जिजीविषा का अड़ियलपन है। कहानी कहने के कई तरीके होते हैं। कोई मुकम्मल तरीका नहीं होता। इधर, लेखिकाएं बहुत तरीके से लिख रही हैं। उनमें लेखन का एक छोटा-सा जलजला उठा हुआ है।

रोज ही कोई न कोई रचना आ जाती है, जो ध्यान खींचती है। वह महात्मा गांधी का प्रभाव था कि कई महिलाओं ने देश के स्वतंत्रता आंदोलन के समय रेशमी साड़ियों की जगह खादी की धोती पहनना शुरू कर दिया था। महात्मा गांधी का महिलाओं पर क्या प्रभाव पड़ा, इस बारे में बहुत कम लिखा गया है। यह नये किस्म का फेमिनिज्म है जिससे समाज में सकारात्मक विचार आते हैं। वह मथुरा की रहने वाली हैं। उनके पति स्वयं एक अच्छे कथाकार रहे हैं। वह कहा करते थे - 'ममता की पृष्ठभूमि कल्चर से है और मेरी एग्रीकल्चर से।' वह मूलतः पंजाब से थे। रवींद्र कालिया ने ही उन्हें हिंदी में लिखने के लिए प्रेरित किया। रवीन्द्र कालिया कई शहरों की खाक छानकर इलाहाबाद पहुंचे और वहीं के होकर रह गए। दरअसल इलाहाबाद के माहौल में हिंदी, उर्दू, अवधी और अंग्रेजी का मिला जुला नूर है। इस शहर की फिजा में अदब का हर रंग शामिल है, गीत, कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास और आलोचना।

अवलोकन

वह कहती हैं कि आज जितने भी महत्वपूर्ण प्रयास हो रहे हैं या जितनी भी समस्याएं हमारे सामने हैं, वे एक दिवस के रूप में सिमट गई हैं- जैसे गांधी जयंती, हिन्दी दिवस, हिन्दी पखवाड़ा आदि। इसे मनाने वाले लोग सोच लेते हैं कि हमने प्रश्नों का हल ढूंढ लिया। हिन्दी के साथ भी कुछ ऐसा ही है। आज ऐसा नहीं है कि हम हिन्दी को छोड़कर कोई और भाषा सीख रहे हैं, बल्कि हम हिन्दी को अन्य भाषाओं के मुकाबले रखने में शर्म महसूस कर रहे हैं। नौकरी की दृष्टि से हिन्दी को लेकर अमूमन 1960 तक सरकारी प्रयास ठीक थे, लेकिन हिन्दी से संबंधित सरकारी पदों पर बैठे लोगों ने मठाधीशों की भूमिका निभानी शुरू कर दी। उन्होंने ही हिन्दी का सबसे ज्यादा बेड़ागर्क किया है। मैंने जब लिखना शुरू किया था, प्रायः उस उम्र में आजकल लेखिकाएँ नहीं लिखतीं। आजकल प्रौढ़ अवस्था में वे लिखना शुरू करती हैं, जब कलम-कलाई में चौकन्नापन आ जाता है। मेरे लिए लेखन साइकिल चलाने जैसा एडवेंचर रहा है, डगमग-डगमग चली और कई बार घुटने, हथेलियाँ छिलाकर सीधा बढ़ना सीखा। समस्त गलतियाँ अपने आप कीं, कोई गॉडफादर नहीं बनाया। बिल्ली की तरह किसी का रास्ता नहीं काटा और किसी को गिराकर अपने को नहीं उठाया। हमारे समय में लिखना, मात्र जीवन में रस का अनुसंधान था; न उसमें प्रपंच था न रणनीति। निज के और समय के सवालोंने से जूझने की तीव्र उत्कंठा और जीवन के प्रति नित नूतन विस्मय ही मेरी कहानियों का स्रोत रहा है।[3,4]

अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका गृहस्वामिनी की प्रथम वर्षगांठ पर वेबिनार हुआ, जिसमें बतौर मुख्य अतिथि प्रसिद्ध कथाकार ममता कालिया शामिल हुईं।

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 8, Issue 7, July 2019

ममता कालिया ने इस विषय पर अपनी राय देते हुए कहा कि महिलाओं के लिए सुरक्षा और अधिकार की बात तो 19वीं शताब्दी से ही शुरू हो गई थी, लेकिन इसके बावजूद स्त्रियों के विरुद्ध हिंसा बढ़ी है, घटी नहीं। इसके रूप भी बदल गए हैं। घरेलू हिंसा, जो प्रायः पुलिस थानों में दर्ज नहीं होते, वास्तव में गलत के प्रति सहिष्णुता, जो लाचारी से प्रारंभ होती है, का परिणाम है। आवश्यकता है महिलाओं को शिक्षित करें, जागृत करें, अधिकार की चेतना प्राप्त करने के लिए महिलाएं अधिक से अधिक राजनीति में सक्रिय हों, विधायिका, कार्यपालिका व न्यायपालिका में उनका प्रतिशत बढ़े।

नारीवादी आंदोलनों की अभिव्यक्तियों को शामिल किया है जो 1960 के दशक से यूरोप, अमेरिका, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया में बह गए हैं। उसी समय भारत में ममता कालिया की कविताएँ दिखाई दीं। जिन्होंने न केवल भारतीय अंग्रेजी कविता के फालोगोसेंट्रिक प्रवचन को नई आवाजों में विषयगत सामग्री की एक नई श्रृंखला पेश करके पूरी तरह से परेशान किया, लेकिन अपनी कला में अपने अनुभवों को शैलियों के व्यापक स्पेक्ट्रम से जोड़ते हैं।[5,6]

विचार – विमर्श

1940 में वृंदावन में जन्मी, ममता कालिया एक प्रख्यात द्विभाषी कवि हैं, जिन्होंने अठारह वर्ष की आयु में लिखना शुरू किया था। वह एक बहुआयामी लेखिका हैं, जिनके पास हिंदी में कई उपन्यास, कविताएँ और दो सौ से अधिक लघु कथाएँ हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में स्नातकोत्तर पूरा करने के बाद, उन्होंने दिल्ली और मुंबई में अंग्रेजी साहित्य के व्याख्याता के रूप में काम किया। बाद में उन्होंने इलाहाबाद में महिला सेवा सदन डिग्री कॉलेज की प्रिंसिपल के रूप में कार्य किया। उन्हें यशपाल सम्मान (1985), महादेवी वर्मा मेमोरियल अवार्ड (1998), साहित्य भूषण सम्मान (2004), जनवाणी सम्मान (2009) और सीता स्मृति पुरस्कार (2012) जैसे कई पुरस्कारों और पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उस समय में जब महिलाओं से विनम्र और शर्मीले होने की उम्मीद की जाती थी, कालिया "टिट फॉर टाट" कविता में लिखती हैं, "मैं तुम्हें मारूंगा / मैं तुम्हें फाड़ दूंगा! / मैं तुम पर मुहर लगाऊंगा" (16)। कालिया की कविता की मुख्य विशेषताओं में से एक यह है कि यह लैंगिक असमानता, घरेलू जीवन की एकरसता और सामाजिक वर्जनाओं के मुद्दे को अत्यंत सटीकता के साथ लेकिन कॉमेडी के स्पर्श के साथ पकड़ती है। कड़े साहित्यिक मॉडलों पर उनकी गैर-निर्भरता ही उनकी कविता को स्पष्ट और लोकप्रिय दोनों बनाती है। वह उन कुछ लेखकों में से एक हैं जो आम आदमी की समस्याओं के बारे में एक आम आदमी की भाषा में लिखते हैं यानी बौद्धिक शब्दजाल से छिनी गई भाषा। बौद्धिक शब्दजाल से छिनी गई भाषा। बौद्धिक शब्दजाल से छिनी गई भाषा।[7,8]

उन्होंने आज के समय में महिला सुरक्षा, मानवतावादी से उपभोक्तावादी तक समाज के संक्रमण, बढ़ते कट्टरवाद और आज के पाठकों से जुड़ने के लिए लेखन शैली को फिर से कॉन्फ़िगर करने की आवश्यकता जैसे अन्य मुद्दों को भी छुआ।

ममता कालिया के लिए मूल्य है:

मेरे असंतोष की घड़ी में

मैं न तो चिल्लाता हूँ और न ही शेखी बघारता

हूँ, मैं बस अपनी कलम में स्याही भरता हूँ

और इसे इरादे से फैलाता हूँ।

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 8, Issue 7, July 2019

ममता कालिया अपने लेखन के माध्यम से दुनिया के खिलाफ समर्थन में :

मैं लिखने

क्योंकि मैं काट नहीं कर सकते हैं

यह तरीका है

कमजोर लोगों को लड़ते हैं।

परेशान

मेरी कलम को तलवार की तरह इस्तेमाल करना।

सबसे अच्छा केवल मौखिक कलह पैदा करना

और समय के अनुरूप भौतिकवादी हो जाना, कागज और 'बोर्ड' को अस्वीकार करना और 'नकद' से 'जमा' की कामना करना।[9,10]

परिणाम

कालिया ने 2017 में अपने उपन्यास दुखम सुखम के लिए भारत के सबसे अमीर साहित्यिक पुरस्कारों में से एक व्यास सम्मान जीता। यह पुरस्कार गोवा की राज्यपाल मृदुला सिन्हा द्वारा प्रस्तुत किया गया था, जिन्होंने उपन्यास को "भारतीय संस्कृति के सार पर कब्जा करने" के रूप में वर्णित किया था।। कालिया के पिछले उपन्यास, Beghar (बेघर) बहुत व्यावसायिक रूप से सफल रहा था, पाँच संस्करण के लिए चल रहा है। उन्होंने कई उपन्यास और लघु कहानियों का संग्रह, कविता के चार संग्रह है, साथ ही दो नाटकों संग्रह लिखा है। वह वर्तमान में अपने पति की जीवनी लिख रही हैं, साथ ही इलाहाबाद के इतिहास के बारे में एक किताब भी लिख रही हैं। उनका लेखन महिलाओं के जीवित अनुभवों से जुड़ा है, अक्सर भारत में मध्यम वर्गीय परिवारों में। उन्होंने कई अन्य साहित्यिक पुरस्कार भी जीते हैं, जिनमें यशपाल कथा सम्मान, साहित्य भूषण सम्मान, राम मनोहर लोहिया सम्मान, महादेवी वर्मा सम्मान और सीता पुरस्कार शामिल हैं। [11]

छेड़छाड़, दहेज और घरेलू हिंसा के मामलों में तेजी से वृद्धि हुई है। यह सब समाज के पितृसत्तात्मक रवैये से उपजा है। किसी कवि के लिए या किसी भी संवेदनशील व्यक्ति के लिए अपने आस-पास की हताशा के प्रति उदासीन रहना संभव नहीं है। यदि महिलाओं की कविता में विषयगत सरोकार पितृसत्ता के इर्द-गिर्द घूमते हैं, तो यह संयोग की बात नहीं है, बल्कि कवि की ओर से एक सचेत निर्णय है जिसका सम्मान किया जाना चाहिए। जब कोई सभी नकारात्मक को एक साथ रखता है तो वह सकारात्मक के रूप में सामने आता है। केवल जब आप समाज में चीजों की अनुपयुक्तता दिखाते हैं, तो यह उपयुक्तता की प्यास को उत्तेजित करता है। जैसे, जब मैं एक अविवेकी और प्रबल पति के बारे में बात करती हूँ, तो यह वास्तव में एक दयालु और अधिक संवेदनशील साथी के लिए मेरी लालसा है। उपयोगिता इसलिए आती है क्योंकि व्यर्थता दिखाई गई है।

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 8, Issue 7, July 2019

चुने हुए काम संपादित :

कविता संग्रह:

- 1) खाँटी घर औरत (एक उलझी हुई घरेलू महिला)
- 2) प्रश्न (मैं कितने प्रश्न पूछूँ ?)
- 3) पापा और अन्य कविताओं को श्रद्धांजलि
- 4) कविताएँ 78

उपन्यास:

- 1) बेघर (बेघर)
- 2) नर्क दर नर्क (नरक से नर्क)
- 3) प्रेम कहानी (एक प्रेम कहानी)
- 4) सलाह (लड़कियाँ)
- 5) एक पत्नी के रिश्ते (एक पत्नी के नोट्स)
- 6) दौड़ (दूरी)
- 7) अँधेरे का प्रकाश (अँधेरे का ताला)
- 8) सुखखम् - सुखम् (दुख और सुख दु)

अन्य कार्य:

- 1) नाटकों: यहाँ रहना मना है (यह यहाँ रहने के लिए मना किया है), आप न बदलेंगे (आप में परिवर्तन नहीं होगा)
- 2) संस्मरण: कितने शहरों में कितनी बार (कैसे कितने शहरों में कई बार)
- 3) सॉमरसेट मौघम के मानव बंधन का हिंदी में अनुवाद

उनका लेखन महिलाओं के जीवित अनुभवों से जुड़ा है। मेरे अनुसार नारीवाद लोगों से महिलाओं और उनसे संबंधित मुद्दों के प्रति अधिक सहानुभूति रखने की अपील है। नारीवाद महिलाओं की अधीनता का हिसाब देने की कोशिश करता है लेकिन मैं कुप्रथा का समर्थन नहीं, नारीवाद की रीढ़ महिलाओं के उत्पीड़न के खिलाफ जवाबी कार्रवाई करना है न कि पुरुषों के खिलाफ खंजर खींचना। यह विडंबना ही है कि हिंदी साहित्य में मुझे बहुत ही सौम्य नारीवादी माना जाता है जबकि अंग्रेजी में वे मुझे उग्रवादी कहते हैं। [12]

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 8, Issue 7, July 2019

निष्कर्ष

भारतीय अंग्रेजी महिला कविता समय और स्थान के माध्यम से और विभिन्न विवेचनात्मक स्पेक्ट्रम में महिलाओं के विविध अनुभवों का वर्णन करती है। जबकि कुछ महिला कवि नारीवादी होने के बारे में स्पष्ट हैं, अन्य आंदोलन के लिए एक स्पष्ट प्रतिबद्धता को धोखा नहीं देती हैं। हालांकि संबद्धता अलग-अलग हो सकती है, फिर भी पितृसत्तात्मक संरचनाओं के खिलाफ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से एक स्पष्ट विरोध हर महिला कवि के विषयगत दायरे का गठन करता है। भारतीय महिला कवयित्री शर्म-प्रलोभन, घर-दुनिया और व्यक्तिगत-राजनीतिक के बायनेरिज़ की आलोचना करती हैं जो एक महिला की स्वतंत्रता को बाधित करती हैं। स्वतंत्रता के समय से समकालीन भारतीय महिला कविता में एक आदर्श बदलाव आया है। यह विभिन्न सामाजिक-ऐतिहासिक मोड़ और राजनीतिक उतार-चढ़ाव के माध्यम से एक महिला की यात्रा से पैदा हुआ है। कई निपुण कवियों ने लैंगिक भेदभाव और घरेलू जीवन की नीरसता का मार्मिक ढंग से जवाब दिया है, लेकिन ममता कालिया इस समूह से अलग हैं। वह एक ऐसी भाषा में अनुरूपवादी नारीत्व के खिलाफ अपना आक्रोश दर्ज करती है जो सरल लेकिन प्रभावी है। हालांकि उन्होंने अंग्रेजी में कविताओं के केवल दो संकलन लिखे हैं (पापा और अन्य कविताओं और कविताओं '78) को श्रद्धांजलि फिर भी पाठकों के मन पर एक स्थायी छाप छोड़ी है।[13]

एक भारतीय महिला को हमेशा इस दुविधा का सामना करना पड़ता है कि उसे अपनी स्वतंत्रता का दावा करना चाहिए या पारंपरिक मूल्यों का पालन करना चाहिए। अन्य कवियों की तरह, मुझे भी परंपरा और आधुनिकता के बीच चयन का सामना करना पड़ रहा है। हर संस्कृति ने हमेशा घर बनाने और मातृत्व को अपने जीवन की आवश्यक भूमिकाओं के रूप में बढ़ावा देकर महिलाओं की स्वतंत्रता को प्रतिबंधित किया है। हालांकि, इक्कीसवीं सदी में, महिलाओं की स्थिति तेजी से बदल रही है। वे सभी मौलिक मानवाधिकारों का प्रयोग कर सकते हैं और अधिक सार्थक जीवन जी सकते हैं। जब मैं छोटा था तब मेरी कविताएँ मेरे आस-पास के वातावरण की प्रतिक्रिया थीं। मैं कहूँगा कि अंग्रेजी में मेरी कविताओं में अधिक परंपरा नहीं है, हालांकि वे आधुनिकता पर अपना दावा करती हैं। मैं सब कुछ अपने तरीके से करना चाहता था और परंपरा से दूर जाना चाहता था। मैं एक 'व्यक्तिगत प्रतिभा' से अधिक हूँ। आदमी। मैं भी परंपरा के बहुत पक्ष में नहीं हूँ क्योंकि यह पुरानी है और विशेषकर महिलाओं के लिए निरंकुश रही है।[13]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. कालिया, ममता. "ममता कालिया की कहानी-परदेसी". अभिव्यक्ति (वेब पत्रिका). मूल (अभिव्यक्ति) से 19 मार्च 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 2014. |author-link1= के मान की जाँच करें (मदद); |access-date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
2. कालिया, ममता. "पुस्तक की भूमिका". वाणी प्रकाशन. मूल से 15 मार्च 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 2014. |access-date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
3. कालिया, ममता. "लेखक ममता कालिया का व्यक्तित्व". महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय. मूल (हिन्दी समय) से 5 मई 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 2014. |access-date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
4. कालिया, ममता. "ममता कालिया का व्यक्तित्व". अभिव्यक्ति (वेब पत्रिका). मूल (अभिव्यक्ति) से 19 मार्च 2015 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 2014. |author-link1= के मान की जाँच करें (मदद); |access-date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
5. शीर्षक:ममता कालिया की कहानियाँ - भाग 1, प्रकाशक:वाणी प्रकाशन, आईएसबीएन : 81-8143-300-9, प्रकाशित :फरवरी 02, 2005:, मुखपृष्ठ :सजिल्द:, भाषा:हिन्दी
6. शीर्षक:ममता कालिया की कहानियाँ भाग-2, प्रकाशक:वाणी प्रकाशन, आईएसबीएन : 81-8143-485-4, प्रकाशित:फरवरी 02, 2006, मुखपृष्ठ :सजिल्द, भाषा:हिन्दी

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 8, Issue 7, July 2019

7. कालिया, ममता. "ममता कालिया की पुस्तकें". भारतीय साहित्य संग्रह. मूल से 15 मार्च 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 15 मार्च 2014. |access-date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
8. शीर्षक: कितने शहरों में कितनी बार, प्रकाशक: वाणी प्रकाशन., आईएसबीएन : 9788126718764, प्रकाशित : फरवरी जनवरी 01, 2010, मुखपृष्ठ : सजिल्द, भाषा: हिन्दी
9. "साहित्यकार ममता कालिया को व्यास सम्मान". मूल से 19 अक्टूबर 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 19 अक्टूबर 2018.
10. "Hindi writer Mamta Kalia to get the 27th Vyas Samman". मूल से 9 दिसंबर 2017 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 8 दिसंबर 2017.
11. "कहानीकार ममता कालिया को लमही सम्मान". नवभारत टाइम्स. 28 जून 2010. मूल से 15 मार्च 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 15 मार्च 2014. |access-date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
12. "समालोचना में समाचार". मूल से 15 मार्च 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 15 मार्च 2014.
13. हिन्दी भाषा की लेखिका ममता कालिया को द्वितीय सीता पुरस्कार Archived 2014-03-15 at the Wayback Machine जागरण जोश (हिन्दी)